ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-13-01-2021 ***कैकेयी का अनुताप***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कैकेयी का अनुताप

--मैथिलीशरण गुप्त

“यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।"

चौंके सब सुनकर अटल कैकेयी-स्वर को।

सबने रानी की ओर, अचानक देखा,

वैधव्य-तुषारावृता यथा विधु लेखा।

बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा,

वह सिंही अब थी हहा! गोमुखी गंगा
"हाँ, जनकर भी मैंने न भरत को जाना
सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना।

यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।
दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है,
पर अबलाजन के लिए कौन सा पथ है?

यदि मैं उकसाई गई भरत से होऊँ,
तो पति समान ही स्वयं पुत्र भी खोऊँ।
ठहरो, मत रोको मुझे, कहूँ सो सुन लो,
पाओ यदि उसमें सार उसे सब चुन लो।

करके पहाड़-सा पाप मौन रह जाऊँ?
राई-भर भी अनुताप न करने पाऊँ?
थी सनक्षत्र शशि-निशा ओस टपकाती,
रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती।

क्रमशः

छात्र कार्य- प्रस्तुत दोहे को कंठस्थ याद करें।

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'